तेजिंदर के उपन्यासों में समकालीन यथार्थ की विविध प्रतिछवियां

पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)
के कला संकाय अंतर्गत हिन्दी विषय में
पी–एच.डी. उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध–रूपरेखा
2015

निर्देशक

डॉ. रमेश अनुपम
सहायक प्राध्यापक
शासकीय दू.ब. महिला स्नातकोत्तर
स्वशासी महाविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

शोध छात्रा

संजू साहू

शोध केन्द्र : हिन्दी विभाग
शासकीय दू.ब. महिला स्नातकोत्तर
(स्वशासी) महाविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

1.	शोध प्रबंध का शीर्षक	:–	''तेजिंदर के उपन्यासों में समकालीन यथार्थ की विविध प्रतिछबियां''
2.	विश्वविद्यालय	:–	पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)
3.	शोध केन्द्र	:–	हिन्दी विभाग, शासकीय दू.ब. महिला स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)
4.	विषय	:–	हिन्दी साहित्य
5.	निर्देशक	:–	डॉ. रमेश अनुपम सहायक प्राध्यापक शासकीय दू.ब. महिला स्नातकोत्तर (स्वशासी) महाविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)
6.	शोध छात्रा	:–	संजू साहू

1. शोध प्रबंध का शीर्षक

तेजिंदर के उपन्यासों में समकालीन यथार्थ की विविध प्रतिछवियॉ

2. प्रस्तावना

यथार्थवाद शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग फ्रांस के कोरपेत्स की चित्रकला में 1850 में हुआ था। इसके कुछ समय पश्चात् साहित्य में यथार्थ का पदार्पण हुआ। यथार्थवाद शब्द की अवधारणा की उत्पत्ति अंग्रेजी के ''रियलिज'' शब्द से हुई है, जिसका अर्थ ठीक (रीयल), वास्तविक (एक्चुअल), पदार्थ (मेटर) है। साहित्य में यथार्थवाद का उद्भव उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में हुआ था जिसमें यथार्थवाद समकालीन जीवनबोध की यथार्थता को चित्रित करता है। बीसवीं शताब्दी में यही यथार्थवाद सामाजिक यथार्थवाद के रूप में अपना नूतन रूप निर्मित करता है।

यथार्थ वह है जो वस्तुस्थिति के अनुरूप होता है, जैसी वस्तु है उसका यही चित्रण यथार्थ कहलाता है। चेतना को संपूर्णता में होना यथार्थ है। अगर कोई रचनाकार ऐसा नही करता तो निश्चित यथार्थ के इस पक्ष से ज्ञानविहिन हो जायेगा। यही विचार आगे चल कर यथार्थवाद कहलाया। प्रसिद्ध दार्शनिक 'हीगल' ने माना कि अस्तित्व अपने आप में यथार्थ नहीं होता। यथार्थ केवल वही है जो बोधगम्य है। जबकि मार्क्सवाद के जनक जर्मनी के कार्ल मार्क्स ने केवल बोधगम्य वास्तविक जगत ही यथार्थ है, ऐसा माना।

इस प्रकार जो साहित्य जानबूझकर बोधगम्यता को नकारता है, उसमें यथार्थ की निर्णायक धार नहीं होती है। इससे साहित्य में अंतर्वस्तु के रूप में आने वाली मानवीकृत भ्रांत जगत के विरोध में आई हो लेकिन वस्तुतः उसी भ्रांत जगत की छाया है। हंगरी के प्रसिद्ध दार्शनिक ''जार्ज लुकाच'' ने यथार्थवाद की केन्द्रीय भूमिका के लिए मनुष्यता की समग्र पहचान पर विशेष बल दिया है। इसके अनुसार वास्तविक पूर्ण यथार्थवाद मनुष्य की संपूर्ण अनुभूतियों की सही व्याख्या का नाम है। वास्तविक एवं पूर्ण यथार्थवाद मानवतावाद

के विभिन्न आयामों के रेखांकन की मांग करता है। मानवतावाद अपनी सम्पूर्णता में वास्तविक यथार्थवाद है, संपूर्ण यथार्थवाद है।

रूप और वस्तु का समन्वय ही सही यथार्थवाद है। यूरोप में यथार्थवाद स्वंछतावाद के विरोध में आया है, इसलिए वास्तविक जीवन में उसका गहन संबंध भी रहा है। यथार्थवादी वास्तविक जीवन में भी उसका गहन संबंध रहा है। यथार्थवादी साहित्यकार मानवीय जीवन में तथ्यात्मक अंकन से अपनी कलात्मक यात्रा प्रारंभ करता है। उसके लिए पात्र की परिकल्पना और चयन समकालीन जीवंत मानवीय चरित्र से करता है, जिसकी चेतना सामाजिक चेतना होती है। अपने युग का वह मनुष्य जो संघर्षरत् है, जो क्रान्ति लाता है वही यथार्थवादी उपन्यास में मुख्य पात्र होता है। यथार्थवाद को परिपूर्णता लाने के लिए मानवीय अनुभूतियों की सही अभिव्यक्ति देने के लिए रचनात्मक क्रान्तिकारी यथार्थ आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक झंकृति आज की महती आवश्यकता है।

यथार्थ कोई हवाई अमूर्त वस्तु नहीं है। यथार्थ किसी देशकाल से परे नहीं होता, इसलिए देशकाल और कालबद्ध यथार्थ के बारे में लिखता है, वही सच्चे अर्थो में यथार्थवादी माना जाता है। मार्क्सवाद भी इसका समर्थन करता है।

प्रसिद्ध अमेरिकी यथार्थवादी विलियम डीन हावल्स के विचार भी यथार्थवाद के प्रति कुछ ऐसे ही हैं, कि सामग्री के तथातत्व चित्रण से न कुछ अधिक है और न कुछ कम। सच्चा यथार्थवादी नव मानव जीवन पर दृष्टिपात करता है तो यह नहीं कह सकता है कि अमूक वस्तु देखने योग्य है और अमूक नहीं।

भारत केवल एक आर्थिक और सामाजिक यथार्थ नहीं बल्कि एक जीवन दृष्टि भी है। उस जीवन दृष्टि को उसकी समग्रता में देखा, परखा और समझा जाना ही यथार्थ होगा। समकालीन समालोचकों, विचारकों एवं लेखकों की सबसे बड़ी कमजोरी यही मानी जाती है, कि जो प्रयास प्रेमचंद ने यथार्थ के लिए किया। आज के रचनाकारों में वह समर्थता नहीं है, क्योंकि उन्होंन भारतीय अस्मिता को समग्रता से अवलोकन करने का सार्थक प्रयास नहीं किया है या कम किया है।

प्रेमचंद के उपन्यासों में यथार्थ चेतना ही उनकी मूल शक्ति है। उनके पूर्व किसी भी उपन्यासकार ने यथार्थ की गहराई को नहीं पकड़ सके, जिससे शिल्प संवर नहीं पाया।

प्रेमचंद किसी भी वाद की एकांगित से पीड़ित न होकर अपने पूरे युग और समाज को उसकी समस्त जटिल वास्तविकता के साथ पकड़ने का साहस रखते थे, इसलिए जहां उनके उपन्यास में सामाजिक यथार्थ के विभिन्न रूप प्रस्तुत हो रहे है थे तो दूसरी ओर विभिन्न प्रकार की परिस्थितियां और संस्कारों में पले व्यक्तियों की मानसिक गहराईयों में जाकर मन सत्यों का उद्‌घाटन कर रहे थे। वैसे प्रेमचंद का युग राष्ट्रीय और सामाजिक उथल–पुथल का युग था। प्रेमचंद के साथ यथार्थ के जिन दो आयामों (सामाजिक, मनोवैज्ञानिक) का उद्‌घाटन हुआ, वो इसके बाद अलग–अलग धाराओं में विभाजित हो गया। इस बीच यथार्थ लेखन में जो परिवर्तन आए जिससे उपन्यास के कथा विन्यास, पात्र, रचना, देशकाल आदि का स्वरूप वह नहीं रहा जो प्रेमचंद के उपन्यासों में दिखाई पड़ता है। उपन्यास की पृष्ठभूमि कैसी भी क्यों न हो, उसमें उपन्यासकार की यथार्थधर्मिता निहित रहती है। आदर्शवादी उपन्यासकार भी यथार्थ की अवहेलना नहीं कर सकता, उसका आदर्श यथार्थ की जमीन पर ही पल्लवित होता है। उपन्यास में संभावितता के गुण से ही यथार्थता की सही पहचान होती है।

उत्कृष्ट उपन्यासों को पढ़ते समय पाठक जीवन से पलायन नहीं करता बल्कि वह जीवन रूपी यथार्थ को समझता है, इससे उसके अनुभवों का दायरा बढ़ता है। यथार्थ के पहचान से तात्पर्य मानव जीवन या व्यक्ति जीवन के समुचित आंकलन से है। उपन्यास की रचनाधर्मिता यथार्थमूलक होनी चाहिए। यथार्थवाद साहित्य की विशिष्ट चिंतन पद्धति है, जिसमें तेजिंदर के उपन्यास विशुद्ध यथार्थवाद की पृष्ठभूमि पर रचित कृतियां है। प्रेमचंद और भीष्म साहनी को अपना प्रेरक मानने वाले उपन्यासकार तेजिंदर की कृतियों में इनकी धुंधली सी छवि दिखाई पड़ती है। समकालीन उपन्यासकारों में तेजिंदर का यथार्थवाद पाठकों को सत्यता से रूबरू कराता है।

यथार्थवाद के अनुसार उपन्यासकार को अपनी कृतियों में जीवन के यथार्थ का रूपांकन करना चाहिए। समकालीन उपन्यासकारों में तेजिंदर के उपन्यासों में भी यथार्थ

रूपी जीवन की समस्त परिस्थितियॉ बड़ी ही ईमानदारी से उजागर हुए हैं, जिसमें रचनाकार ने हीनताओं और कुरूपताओं का भी कुशल सामंजस्य किया है।

तेजिंदर ने अपने चारों उपन्यास 'वह मेरा चेहरा;, 'काला पादरी', 'हैलो सुजीत', सीढ़ियों पर चीता' के माध्यम से जीवन समाज, वर्तमान परिवेश के सुंदर अंश को छोड़कर असुंदर अंश का अंकन किया है। इसमें असुंदर अंश से तात्पर्य समाज में व्याप्त गरीबी, भूखमरी, बदहाली, हिंसा, सांप्रदायिकता, भ्रष्टाचार, छुआछूत, शोषण, कुत्सित राजनीति इत्यादि से है। तेजिंदर ने इन सभी परिस्थितियों को करीब से महसूस किया है, जबकि वे स्वयं इससे प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित नहीं थे। एक सच्चे यथार्थवादी उपन्यासकार में मानवतावादी दृष्टिकोण का होना अतिआवश्यक है तभी वह अपने यथार्थपरक रचना के साथ न्याय कर पाएगा। अपनी इसी विशेषता की वजह से प्रेमचंद हिंदी उपन्यास जगत में ध्रुव स्थान बनाए हुए हैं।

तेजिंदर के प्रथम उपन्यास 'वह मेरा चेहरा' जिसमें रचनाकार ने 1984 के पंजाब के दंगे के परिदृश्य लिया है, जिसमें यह बताया गया है कि वे पंजाबी युवक जिसका पंजाब से कोई वास्ता नहीं है, वे देश के माहौल को शांति को कैसे प्रभावित करते हैं, उन पर दंगे का क्या प्रभाव पड़ता है। इसकी पृष्ठभूमि पंजाब व बस्तर की है।

दूसरा उपन्यास 'काला पादरी' जिसकी पृष्ठभूमि एवं पात्र सब कुछ अद्भुत है। धर्मान्तरण का मुद्दा, सरगुजा अंचल एवं चर्च की पृष्ठभूमि में एक काला व्यक्ति जिसे पादरी बनाया गया है, उसके अंतर्मन की व्यथा, संवेदना का लेखक ने सूक्ष्मता से चित्रण किया है।

तीसरे उपन्यास 'हैलो सुजीत' महाराष्ट्र के वर्धा की पृष्ठभूमि में मुख्य महिला दलित पात्र कुमुद खोब्रागड़े को केन्द्र में रखते हुए उपन्यासकार भारत की दलित समस्या को विमर्श के केन्द्र में रखने का प्रयास किया है।

तेजिंदर का चौथा उपन्यास 'सीढ़ियों पर चीता' जिसमें एक हिंदी भाषी लेखक द्वारा दक्षिण के तांबरम शहर की पृष्ठभूमि को लेकर ऐसे अद्भुत उपन्यास की रचना करना जिसमें संवाद तथा पात्र सभी प्रायः अंग्रेजी और तमिल में है, एक दुरूह कार्य है। हिंदी में इस अछूते विषय पर संभवतः यह प्रथम रचना है। यथार्थ और कल्पना का ऐसा कुशल

सामंजस्य करने वाले तेजिंदर बिरले हैं। तेजिंदर की सभी औपन्यासिक कृतियां आधुनिक यथार्थ को एक नये रूप में प्रकट करती है। इनके उपन्यास परम्परा, यथार्थ तथा मानवीय पहलुओं को समेटे हुए और समाज के प्रति गहन जिज्ञासाओं से सराबोर हैं। तेजिंदर परंपरा आधुनिक और लोक समाज की परिवर्तनकारी घटनाओं को कुशलता से उल्लेखित करते हैं। तेजिंदर के उपन्यास हिंदी उपन्यास जगत में किसी उपलब्धि से कम नहीं है।

3. पूर्व शोध कार्य का विवरण

हिन्दी के क्षेत्र में मेरी जानकारी के अनुसार अब तक कोई भी ऐसा कार्य प्रकाश में नहीं आया है, जिसने अलका सरावगी के समग्र उपन्यास साहित्य का समकालीन युगीन प्रासंगिकता के परिप्रेक्ष्य में विवेचन प्रस्तुत किया हो। उनके उपन्यासों का गहन एवं सम्यक् विश्लेषण के द्वारा सारगर्भित विस्तृत शोध करने का प्रयास किया गया है, जो हिन्दी साहित्य में महत्वपूर्ण योगदान को उल्लेखित करेगा।

1 कुरियाकोसे रीता, प्रेमचंद के उपन्यासों में समकालीन यर्थाथवाद का पूर्नमुल्यांकन, महात्मा गांधी विश्वविद्यालय, वर्धा, 2013

2 जेकब रूबि एलसा, समकालीन हिन्दी उपन्यासों में विस्थापितों का यर्थाथ, कोचीन यूनिर्वसिटी, साइंस एंड टेक्नालॉजी, 2010

5. शोध का उद्देश्य

विषय चयन के पीछे मेरा सशक्त उद्देश्य था कि तेजिंदर जैसे हिंदी साहित्य के कर्मठ समकालीन उपन्यासकार पर अब तक किसी भी प्रकार का शोध कार्य का न होना।

छत्तीसगढ़ व देश के किसी भी विश्वविद्यालय में 'वह मेरा चेहरा', 'काला पादरी', 'हैलो सुजीत', ' सीढ़ियों पर चीता' जैसे यथार्थपरक उपन्यास के रचनाकार तेजिंदर पर अब तक शोध कार्य का न होना मेरे लिए आश्चर्यजनक बात हैं इसलिए मैंने यह तय किया कि मैं अपना शोध कार्य तेजिंदर के उपन्यास पर केन्द्रित करूंगी ताकि उनके अवदान को मैं हिंदी साहित्य जगत के समक्ष प्रस्तुत कर सकूं। अगर अपने शोध प्रबंध के माध्यम से मैं तेजिंदर के अवदान को थोड़ा बहुत भी प्रकट कर सकी तो मेरे शोध प्रबंध व मेरे द्वारा किए गए कार्य की सार्थकता होगी। नये और अंजान पथ पर चलना अपनी एक अलग अनुभूति और चुनौती है, अतः अपने शोध प्रबंध के माध्यम से तेजिंदर के उपन्यास और समकालीन यथार्थ से संबंधित तथ्यों को स्थापित करना मेरा मुख्य उद्देश्य है।

6. शोध का महत्व

अपने शोध कार्य के माध्यम से मैंने तेजिंदर के उपन्यासों में अंतनिर्हित समकालीन यथार्थ को विश्लेषित करने की चेष्टा की है। तेजिंदर के उपन्यास यथार्थ की ओर दृष्टिपात करती है। यों तो उपन्यास पर बहुत कार्य हुए हैं, पर तेजिंदर पर मेरे द्वारा किया गया यह शोध कार्य प्रथम प्रयास है। समकालीन यथार्थ को जिस तरह से तेजिंदर ने अपने उपन्यासों में चित्रित किया है वह अपने आप में अद्भुत है। अपने शोध के माध्यम से मैंने तेजिंदर के उपन्यासों के संदर्भ में समकालीन यथार्थ को विश्लेषित करने का प्रयास किया है, जो भविष्य में निश्चय ही छात्रों, शोधार्थियों को मार्ग प्रशस्त करने में सहायक सिद्ध होगा।

7. प्रस्तावित शोध प्रविधि

प्रस्तावित शोध प्रविधि के अंतर्गत वस्तु तथ्यात्मक प्रणाली एवं प्रवृत्ति मूलक प्रणाली का प्रयोग किया जायेगा। एवं लेखक के विभिन्न ग्रन्थ, सहायक ग्रन्थ, एवं अभिलेख डायरियां इत्यादि को शोध कार्य में सम्मिलित कर शोध को वैज्ञानिक रूप प्रदान किया जायेगा।

इसके अतिरिक्त प्रश्नावती एवं साक्षात्कार प्रविधि द्वारा महात्वपूर्ण तथ्यों का संकलन किया जायेगा। इंटरनेट, ब्लॉग, ई–मेल इत्यादि माध्यमों को शोध प्रविधि में शामिल कर शोध को सशक्तता एवं मौलिकता प्रदान किया जायेगा।

आधार :– 1. आधार ग्रंथों का अध्ययन

2. सहायक ग्रंथों का अध्ययन
3. लेखक के विषय में जानकारी
4. समकालीन रचनाकारों का साक्षात्कार
5. लेखक का साक्षात्कार
6. इंटरनेट का अवलोकन

8. प्रस्तावित शोध का अध्यायीकरण

तेजिंदर के उपन्यासों में समकालीन यथार्थ की विविध प्रतिछवियां

प्रस्तावना

1. विषय की व्याख्या
2. विषय की व्याप्ति, सीमाएं एवं पूर्वानुसंधान
3. प्रबंध का कार्यक्षेत्र
4. महत्व

अध्याय 1– तेजिंदर का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

1.1 जन्म एवं शिक्षा दीक्षा

1.2 पारिवारिक पृष्ठभूमि एवं मित्रगण

1.3 लेखन की प्रेरणा एवं लेखन की शुरूआत

1.4 तेजिंदर का कृतित्व

अध्याय 2– उपन्यास का उद्‌भव एवं विकास

2.1 हिंदी उपन्यास का उद्‌भव एवं विकास

2.2 आधुनिक उपन्यास लेखन

2.3 समकालीन उपन्यास लेखन

2.4 समकालीन हिंदी उपन्यासकारों में तेजिंदर का स्थान

अध्याय 3– समकालीन यथार्थ की विविध प्रतिछवियॉ

3.1 समकालीन यथार्थ : अर्थ एवं व्याप्ति

3.2 समकालीन यथार्थ : पाश्चात्य एवं भारतीय अवधारणा

3.3 समकालीन यथार्थ : बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध का समकालीन यथार्थ

3.4 समकालीन यथार्थ : इक्कीसवीं शताब्दी का यथार्थ

अध्याय 4– समकालीन यथार्थ की विविध प्रतिछवियाँ

4.1 समकालीन यथार्थ के विविध रूप

4.2 समकालीन यथार्थ की चुनौतियां

4.3 तेजिंदर के उपन्यासों में समकालीन यथार्थ

4.4 तेजिंदर की वैचारिकता

अध्याय 5– तेजिंदर के उपन्यासों में अन्तर्वस्तु एवं रूप

5.1 अन्तर्वस्तु

5.2 शब्द विधान

5.3 रूप विधान

5.4 बिम्ब एवं प्रतीक

– उपसंहार

परिशिष्ट– (अ) रचना संसार – एक परिदृश्य

(i) जन्म, शिक्षा दीक्षा और लेखन की प्रेरणा

(ii) समग्र रचना संसार

(ब) साक्षात्कार

(स) समकालीन रचनाकारों के कलम से

– आधार ग्रन्थ

– सन्दर्भ ग्रन्थ

9. आधार ग्रन्थ

- तेजिंदर : ''वह मेरा चेहरा'', वाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 1990
- तेजिंदर : ''काला पादरी'', नेशनल पब्लिकेशन हाउस, प्रथम संस्करण, 2000
- तेजिंदर : ''हैलो सुजीत'', भारतीय ज्ञानपीठ, प्रथम संस्करण, 2003
- तेजिंदर : ''सीढ़ियों पर चीता'' राजकमल प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2010
- तेजिंदर : ''सागा सागा'' डायरी राजकमल प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2004
- तेजिंदर : ''बच्चे अलाव ताप रहे हैं'' कविता संग्रह, परिमल प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 1997
- तेजिंदर : ''टिहरी के बहुगुणा'' संस्मरण, शिल्पायन, प्रथम संस्करण, 2010
- तेजिंदर : ''क्या तुम नहा चुके'' कहानी संग्रह, साहित्य भण्डार, प्रथम संस्करण, 2010

10. संदर्भ ग्रन्थ

- चव्हाण, अर्जुन, समकालीन उपन्यासों का वैचारिक पक्ष, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008
- देसाई, पारूकांत हिंदी उपन्यास, साहित्य की विकास परंपरा में साठोत्तरी उपन्यास, चिंतन प्रकाशन, कानपुर, 2002
- गुरू, आलोक भारतीय उपन्यास की अवधारणा और स्वरूप, राजपाल एण्ड संस, दिल्ली, 2012
- जलील, वी. के. अब्दुल, समकालीन हिंदी उपन्यास, समय और संवेदना, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2006
- जलील, वी. के. अब्दुल, स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2000
- मोहनन, एन. समकालीन हिंदी उपन्यास, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2013
- नायर, शांति, भारतीय संकट की त्रासदपूर्ण स्थिति : दलित चेतना के आयाम, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2000
- पचौरी, सुधीश, उत्तर यथार्थवाद, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2004
- राय गोपाल, हिंदी उपन्यास का इतिहास, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010
- शुक्ल, रामचंद्र हिंदी साहित्य का इतिहास, विश्वभारती प्रकाशन, नागपुर, 2008
- सिंह, विजय मोहन बीसवीं शताब्दी का हिंदी साहित्य, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2010
- सिंह, अजब, यथार्थवाद : पुनर्मुल्यांकन, विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक, वाराणसी, 1998

शोध निर्देशक के प्रकाशित ग्रंथों का विवरण

- ठाकुर जगमोहन सिंह (समग्र) – रमेश अनुपम
  नई दिल्ली, 2014
  पहला संस्करण

- समकालीन हिंदी कविता – रमेश अनुपम
  शताक्षी प्रकाशन, रायपुर
  प्रथम संस्करण – 2000

- चयनिका, ठाकुर जगमोहन सिंह – रमेश अनुपम
  छत्तीसगढ़ राज्य हिंदी ग्रंथ अकादमी, रायपुर, प्रथम संस्करण, 2008

- जल भीतर इक बृच्छा उपजै – रमेश अनुपम
  नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नई दिल्ली
  पहला संस्करण, 2008

- लौटता हूं मैं तुम्हारे पास (काव्य संग्रह) – मेधा बुक्स, दिल्ली
  प्रथम संस्करण

शोध निर्देशक के प्रकाशित शोध पत्रों का विवरण

• छत्तीसगढ़ मित्र और हिंदी नवजागरण	–	रमेश अनुपम आलोचना' (50वां अंक), नई दिल्ली जुलाई–सितंबर 2013 ISSN2231-6329Dlochana
• माधवराव सप्रे के अनुवाद	–	रमेश अनुपम 'छत्तीसगढ़ मित्र' रायपुर अंक–10, जून 2013 ISSN 2278-392X

निर्देशक

डॉ. रमेश अनुपम
सहायक प्राध्यापक
शासकीय दू.ब. महिला स्नातकोत्तर
(स्वशासी) महाविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

शोध छात्रा

संजू साहू

अग्रेषित

अध्यक्ष
शोध केन्द्र : हिन्दी विभाग
शासकीय दू.ब. महिला स्नातकोत्तर
(स्वशासी) महाविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)